वार्तालाप नं. 322, फर्रूखाबाद, ताः 18.5.07
**Disc.CD No.322, dt.18.05.07 at Farrukhabad**

समय – 8.35
जिज्ञासू – बाबा, सृष्टि चक्र के चित्र में बताया है कि सारी आत्माऐं ब्रह्मा बाबा और जगदम्बा के साथ जा रहे हैं और यही रिपीट करके दिखाया है। कल्पवृक्ष में भी सारी आत्माऐं शंकरजी के साथ जा रही हैं। इसका अर्थ क्या है?

**Time: 8.35**
**Student:** Baba it has been mentioned in the picture of World Cycle that all the souls are going with Brahma Baba and Jagdamba and the same has been shown again. In the (picture of) *Kalpa Vriskha* (The world tree) too all the souls are going with Shankarji. What does it mean?

बाबा – झाड़ के चित्र में बताया है कि सभी आत्माऐं शंकर के साथ जा रही हैं और सृष्टि चक्र के चित्र में बताया है कि सभी आत्माऐं ब्रह्मा–सरस्वती के साथ जा रही हैं। ये दो तरह की बातें क्यों बताई गई? है ना। हाँ बैठो। जिस समय सृष्टि चक्र का चित्र बना था उस समय पहले–पहले त्रिमूर्ति का भी चित्र बना था, आदि में। साक्षात्कार के आधार पर। त्रिमूर्ति का चित्र जो बना था उस समय तीनों मूर्तियाँ मौजूद नहीं होती हैं यज्ञ में। जब तीनों मूर्तियाँ मौजूद ही नहीं हैं तो सृष्टि के मात–पिता कैसे प्रत्यक्ष हो सकते हैं? सृष्टि के मात–पिता ब्रह्मा–सरस्वती को दिखाया गया है।

**Baba:** It has been depicted in the picture of The Tree that all the souls are going with Shankar and in the picture of World Cycle it has been depicted that all the souls are going with Brahma-Saraswati. Why have these two kinds of things been depicted? It has been depicted, hasn't it? Yes, (please) sit down. When the picture of the World Cycle was prepared, at that time first of all, the picture of Trimurty was also prepared on the basis of visions in the beginning. When the picture of Trimurty was prepared, all the three personalities were not present in the *yagya*. When all the three personalities are not present at all, then how can the Mother and the Father of the world be revealed? (That is why) Brahma and Saraswati have been depicted as the Mother and the Father of the world.

वास्तव में ब्रह्मा–सरस्वती को मात–पिता नहीं कहेंगे; क्योंकि मुरली में बोला है – इन ब्रह्मा–सरस्वती को भी मम्मा–बाबा नहीं कहेंगे। क्यों नहीं कहेंगे? क्योंकि ब्रह्मा को भी जन्म देने वाला यज्ञपिता कोई और था। और मम्मा तो बाद में आयी थी। मुरली में बोला है कि – इन मम्मा–बाबा को भी ड्रिल सिखाने वाले यज्ञ के आदि में कोई थे। इनको डायरेक्शन देते थे। ध्यान में जाते थे। इनकी बातों को रिगार्ड दिया जाता था मम्मा–बाबा के द्वारा। इससे साबित हो जाता है कि यज्ञ के आदि में मात–पिता कोई और थे; लेकिन वो खुदा न खास्ता कुछ दिनों के बाद उन्होंने शरीर छोड़ दिया। तो मूर्तियाँ तो यज्ञ में रही नहीं। इसलिए उनका टाईटल जिनको मिला उनको चित्रों में दिखा दिया है।

Actually, Brahma & Saraswati will not be called the Mother and the Father because it has been said in the Murli – Even this Brahma and Saraswati will not be called Mamma and Baba. Why not? It is because the *yagyapita* (father of the *yagya*) who gave birth to even Brahma was someone else. And Mamma had come later on. It has been said in the Murli that – There were some (children) who taught the drill (of meditation) even to this Mamma and Baba in the beginning of the *yagya*. They used to give them directions. They used to go in trance. Mamma and Baba used to give regard to their versions. It proves that in the beginning of the *yagya* someone else was playing the part of the Mother and the Father, but by chance they left their



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

bodies after some days. So, those personalities did not remain in the *yagya*. That is why the ones who got their title have been shown in the pictures.

बाद में झाड़ का चित्र तैयार हुआ। उस झाड़ के चित्र में बाबा ने समझाया – ये झाड़ का चित्र सब धर्मवालों के समझ में आने योग्य है। दूसरे–दूसरे धर्म के लोग झाड़ के चित्र पर जास्ती समझेंगे; क्योंकि हर धर्म के लोग एडम और आदम को मानते हैं। ब्रह्मा और सरस्वती को सारी दुनियाँ के लोग मात–पिता के रूप में नहीं मानेंगे; क्योंकि ब्रह्मा और सरस्वती का कनेक्शन सिर्फ ब्राह्मणों से है।

The picture of The Tree got prepared later on. In that picture of The Tree, Baba has explained – This picture of The Tree can be understood by the people belonging to all the religions. People belonging to the other religions will understand the picture of The Tree in a better way because people of every religion believe in Adam and Eve. People of the entire world will not accept Brahma and Saraswati as their Mother and Father because the connection of Brahma and Saraswati is only with the Brahmins.

और जो सारी सृष्टि का पिता है उसका कनेक्शन हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब धर्मवालों से हैं। इसलिए झाड़ के चित्र में शंकर को सम्पन्न स्टेज में दिखाया है। आकारी स्टेज में दिखाया गया है। फरिश्ताई स्टेज में रहते दिखाया गया हैं; क्योंकि दूसरे धर्म वाले फरिश्तों को मानते हैं, देवताओं को नहीं मानते हैं। और भारत के लोग देवताओं को मानते हैं, फरिश्तों को नहीं मानते हैं। इसलिए झाड़ के चित्र में सब धर्म की बातें हैं। इसलिए दिखाया गया है कि शंकर के द्वारा सब धर्मों की आत्माऐं परमधाम वापस जा रही हैं।

And the one who is the Father of the entire world has a connection with the people of all the religions like, Hindus, Muslims, Sikhs, Christians etc. That is why in the picture of the Tree Shankar has been shown in the perfect form. He has been shown in the subtle stage. He has been depicted to be in the angelic stage because people of other religions believe in angels; they do not believe in deities. And the people of India believe in deities; they do not have belief in angels. That is why in the picture of the The Tree, there are matters relating to all the religions. That is why it has been shown that the souls of all the religions are returning to the Supreme Abode through Shankar.

समय – 17.48
जिज्ञासू – बाबा, त्रिमूर्ति में बी.के. वाले बताते हैं कि शंकर का पार्ट कुछ भी नहीं है वो सिर्फ विनाश करता है। ऐसे क्यों?
बाबा – क्योंकि उनके धर्म का विनाश होता है। उन्होंने जो प्रजा रची है जो इतनी अभी तक मेहनत की है वो सब खलास होने वाली है। तो अपना विनाश कौन चाहेगा? जैसे बिल्ली है, कबूतर है। कबूतर के सामने जब बिल्ली आती है तो कबूतर अपनी आँखे बंद कर लेता है। बिल्ली आई नहीं। ऐसे ही ब्रह्माकुमारियाँ कहती है शंकर होता ही नहीं। जबकि सारी दुनियाँ शंकर को और विष्णु को मानती है। सारी दुनियाँ में शंकर और विष्णु की भगवान के रूप में मान्यता है। मंदिर बने हुए हैं, मूर्तियाँ बनी हुई हैं तो मानना ही पड़ेगा। और वो क्या कहते हैं – शंकर और विष्णु प्रैक्टिकल में होता ही नहीं। उनको कहने दो।

**Time: 17.48**
**Student:** Baba, as regards to Trimurty, the BKs say that Shankar has no part; he just causes destruction. Why is it so?
**Baba:** It is because their religion is destroyed. The subjects that they have made; the hard work that they have put in so far, all that is going to end. So, who will like his own destruction? Take



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

the example of a cat and a pigeon. When the cat comes in front of the pigeon, the pigeon closes its eyes (thinking that) the cat hasn't come. Similarly, the Brahmakumaris say Shankar does not exist at all while the entire world accepts Shankar and Vishnu. Shankar and Vishnu are accepted in the entire world in the form of God. Temples have been built and idols have been prepared; so, they will certainly have to accept (them). And what do they say – Shankar and Vishnu do not exist in practical at all. Let them say.

समय – 19.15
जिज्ञासू – बाबा, सतयुग में और त्रेतायुग में एक ही भाषा थी; लेकिन ये अभी जो हैं साउथ की भाषा और नॉर्थ की भाषा है। दोनों में क्लेरिफिकेशन में अंतर है। तो उसका उच्चारण कहाँ से आया?
बाबा – सतयुग और त्रेता में भाषा नाम मात्र की होती है। वहाँ इशारे से सारा काम होता है; क्योंकि वहाँ बुद्धि की तीक्ष्णता होती है। बुद्धि की एकाग्रता होती है। मन बुद्धि विचलित नहीं होती है, चंचल नहीं होती है। इसलिए थोड़ा–सा वाइब्रेशन भी दिया तो दूसरी आत्मा सामने वाली समझ जाती है। हमारा भी जब कान्सनट्रेशन परिपक्व स्टेज में पहुँच जावेगा तो हमको जास्ती बोलने की दरकार नहीं रहेगी। आमने–सामने की तो बात ही छोड़ो, दूर बैठे हुए व्यक्ति को भी हम संदेश देना चाहेंगे तो मोबाईल की दरकार नहीं होगी।

**Time: 19.15**
**Student:** Baba, there was only one language in the Golden Age and the Silver Age; but now there is a language of the south (of India) and a language of the north (of India). There is a difference between the clarifications (i.e. pronounciation) of both. So, from where did its pronounciation emerge?
**Baba:** In the Golden Age and the Silver Age, language is just for namesake. There the entire task takes place through gestures because the intellect is very sharp there. The intellect is concentrated. The mind and the intellect is not diverted, it does not become unstable. That is why the other soul understands even if someone sends a little vibration. When our concentration too reaches the perfect stage, then there will be no need for us to speak more. Leave the question of someone face to face with us, if we wish to give a message to even a person sitting far away, there will be no need of mobiles.

जिज्ञासू – उसका उच्चारण किसने सिखाया?
बाबा – शान्तिधाम में वाचा होती है? शान्तिधाम में कोई वाचा नहीं होती है। तुम बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लेंगे। तो इस सृष्टि पर जहाँ संगठित रूप में ब्राह्मण परमधाम की स्टेज को उतारेंगे। वहाँ बोल–बोल ज्यादा करेंगे क्या? बोलने की दरकार ही नहीं रहेगी। ये बोल–बोल तब शुरू होता है जब वाचा में आना, देहभान में आना शुरू होता है। तब बहुत बोलते हैं। तो द्वापरयुग से ये शास्त्र बनना शुरू हो गए और बोल–बोल शुरू हो गया। पहले वाचा की दरकार ही नहीं थी।

**Student:** Who taught its pronounciation?
**Baba:** Is there speech in the abode of peace? There is no speech in the abode of peace. You children will bring the Supreme Abode down to this world. So, the place in this world where the Brahmins will bring down the stage of the Supreme Abode in a collective form, will they speak a lot there? There will be no need to speak at all. A lot of speaking begins when speech emerges, when body consciousness begins. Then they speak a lot. So, the creation of the scriptures began from the Copper Age and a lot of speaking begam. Earlier there was no need of speech at all.



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय– 21.25
जिज्ञासू – बाबा, नवरात्रि में जगदम्बा को डुबाते हैं।
बाबा – हाँ, नवरात्रि में पूजा करके देवियों को डुबाते हैं। यहाँ जब एडवान्स में आते हैं तो एडवान्स में आने से पहले बेसिक नॉलेज में जिनको देवियाँ समझते थे उनके ऊपर बहुत धन अर्पण करते हैं। मकान देते हैं, कपड़े देते हैं, खाने–पीने की वस्तुएँ देते हैं। अपने बच्चों को भले न दें ; लेकिन उनको अर्पण करते हैं। फिर जब एडवान्स में आ जाते हैं तो जो डुबीजा–डुबीजा कर देते हैं। तो ये भक्तों की बातें हैं। जैसा बेसिक में हुआ है ऐसा आगे चलकर एडवान्स में भी हो सकता है; क्योंकि जब एक बाप सच्चा प्रत्यक्ष होता है तो चाहे गणेश हो, चाहे हनुमान हो, चाहे देवियाँ हो उन सबकी देहधारियों की पोल पदरी हो जाती है। पोल पट्टी सब की खुल जाती है। सब में कमजोरियाँ समाई हुई हैं। एक बाप ही सच्चा है और बाकी सब? सब देहधारी मनुष्य झूठे साबित हो जाते हैं।

**Time: 21.25**
**Student:** Baba, (the idol of) Jagdamba is immersed (in water) during Navratri (festival).
**Baba:** Yes, during Navratri they worship the *devis* (female deities) and immerse them (in a source of water, like pond, river, ocean, etc.) Here, when someone enters the path of advanced knowledge, before entering the path of advanced knowledge, in the basic knowledge, they used to dedicate a lot of wealth to the ones whom they considered as *devis*. They provide accommodation, clothes, and things to eat and drink. They may not give it to their own children, but they offer it to them (i.e. the *devis*). Then when they enter the path of advance knowledge, they drown them. So, this is about devotees. Whatever has happened in the basic knowledge can happen in the advanced knowledge as well because when the one true Father is revealed, whether it is Ganesh, whether it is Hanuman, whether they are *devis*, the loopholes of all those bodily beings are revealed. Everyone's loopholes are revealed. Everyone has weaknesses. One Father alone is true and what about the rest? All the human beings who are bodily beings prove to be false.

समय– 25.00
जिज्ञासू – बाबा, सुप्रीम सोल बाप पवित्र कन्या के तन में आए ये लॉ नहीं है; लेकिन राम वाली आत्मा जो हैं वो भी तो पवित्र कुमार है।
बाबा – हाँ, माताजी का कहना है कि शिव बाप आते हैं तो पतित तन में आते हैं। पवित्र कन्या के तन में आ नहीं सकते। तो राम वाली आत्मा तो पहले कुमार होती है बेसिक ज्ञान में। तो कुमार में शिवबाप कैसे आ गए? बाबा ने बोला है सबसे जास्ती पतन होता है टी.वी देखने से, फिल्म देखने से और उपन्यास पढ़ने से। जो उपन्यास पढ़ते हैं, फिल्म देखते हैं उनकी आत्मा का सबसे जास्ती पतन हो जाता है। तो मेंटैलिटी जब जास्ती गिरेगी तो शारीरिक क्षीणता भी जास्ती होगी और मानसिक क्षीणता भी जास्ती होती है। उसको पतित कहा जाता है।

**Time: 25.00**
**Student:** Baba, (it is said in the Murlis that) it is against the law for the Supreme Soul Father to come in the body of a virgin. But the soul of Ram is also a pure *Kumar* (a bachelor).
**Baba:** Yes, the mother says that when Father Shiv comes, He comes in a impure and degraded body. He cannot come in the body of a virgin. So, the soul of Ram is initially a Kumar in the basic knowledge. So, how did Father Shiv enter in a Kumar? Baba has said that maximum downfall takes place by watching TV, by watching films, and by reading novels (*upanyaas*). The souls who read novels, watch films, experience maximum downfall. So, when the mentality undergoes greater downfall, then the physical weakness will also be more and the mental weakness will also be more. Such a person is called sinful (*patit*).



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

पतित माना क्या? स्त्री और पुरूष की जो शक्ति है रज और वीर्य की उस शक्ति को धारण करना वो हैं पावन बनना। और वो शक्ति दिन–प्रतिदिन क्षीण होती जाए उसको कहते हैं – पतन में जाना। उससे दृष्टि भी पतित होती है, शक्ति भी पतित होती है, तन भी क्षीण होता है और तन में लगाया जाने वाला धन भी क्षीण होता है। इसलिए ऐसा नहीं है कि आज के कुमार जो बाहर की दुनियाँ में रहकरके ऊँची–ऊँची पढ़ाईयाँ पढ़ लेते हैं वो पावन होते हैं। कोई गारन्टी नहीं है।

What does sinful mean? Retaining the vigour of a woman and a man i.e. the *raj* and the *veerya* respectively means becoming pure. And if that vigour keeps declining day by day, then it is called – experiencing downfall. It makes the vision sinful; the vigour degrades, even the body becomes weak, and the wealth invested on the body also becomes weak. That is why it is not the case that today's *kumars* (bachelors) who live in the outside world and pursue higher studies, are pure. There is no guarantee (about it).

कुमारियों को भी मना कर दिया है – डॉगली पढ़ाई नहीं पढ़ना है। तो जो कुमार ऊँचे ते ऊँचे स्तर की डॉगली पढ़ाई पढ़ते हैं तो दुनियाँवी संग का रंग लगेगा कि नहीं लगेगा? लगेगा। तो पतित बनेंगे या नहीं बनेंगे? बनेंगे। तो शरीर टर्री हो जाएगा या नहीं हो जाएगा? मनसा भी टर्री तो तन भी टर्री। वही एक सबजेक्ट पढ़ने के लिए जो स्वस्थ मनसा वाला होगा उसको कम मेहनत करनी पड़ेगी और वही सबजेक्ट पढ़ने के लिए जो पतित मनसा वाला होगा उसको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। फिर भी सप्लीमेंटरी में फेल हो जाएगा। बार–बार फेल होगा।

Kumaris are also refrained – they should not pursue the dogly studies. So, will the Kumars who pursue highest level of dogly studies be coloured by the worldly company or not? They will. So, will they become sinful or not? They will. So, will the body become weak or not? The mind as well as the body will become weak. In order to study the same subject, the one who has a healthy mind will have to work less hard and in order to study the same subject the one who has a sinful mind will have to make a lot of effort. Even then he will fail in the supplementary (examination). He will fail again and again.

समय– 29.10
जिज्ञासू – बाबा, जो शरीर छोड़ते हैं उनकी आत्मा भटकती है और बाबा कहते हैं कि आत्मा तो उसी शरीर में प्रवेश करती है। तो यही समझ में नहीं आ रहा है।
बाबा – जो अकाले मौत में शरीर छोड़ते हैं उनकी आयु पूरी नहीं होती है। आयु पूरी न होने की वजह से वो आत्मा भटकती रहती है। उसका और एक कारण ये हैं कि जिनकी अकाले मौत होती है उन आत्माओं के ऊपर पाप का बोझा जास्ती चढ़ जाता है। वो बोझा और जास्ती न चढ़े इसलिए उनको अपना शरीर नहीं मिलता है। वो दूसरे के शरीर में प्रवेश करके उल्टा–पल्टा कार्य करते रहते हैं। इसलिए ऐसी आत्माएं भटकती रहती हैं; तुरन्त जन्म नहीं लेती। जब उनका पापों का बोझा हल्का हो जाता है तब उन्हें जन्म मिल जाता है।

**Time: 29.10**
**Student:** Baba, the souls of those who leave their bodies (in accidents) keep wandering and Baba says that the soul (of PBKs) enters into the same body (after destruction). I am unable to understand this.
**Baba:** Those who die an untimely death are unable to complete their (normal) age. Because of not completing its age, that soul keeps wandering. Another reason for that is that the souls who meet an untimely death accumulate more burdens of sins. They do not get their own body (soon) so as to prevent them from accumulating more burdens. They keep entering in the bodies of



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

others and perform wrong acts. That is why such souls keep wandering; they do not take birth immediately. When the burden of their sins decreases, then they take birth.

समय–31.16
जिज्ञासू – बाबा, एक छोटा–सा क्वेश्चन और है। जैसे आपने आज बताया ना कि जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। ये तो हो गई याद में विकर्म विनाश होने की बात। जो आप से मिलना तीन घंटे का हुआ उसमें कितना विकर्म विनाश होंगे?
बाबा – मिलने से, जुलने से विकर्म विनाश नहीं होते हैं; लेकिन मिलने के बाद जो स्मृति आती रहती है। स्मृति आएगी या नहीं आएगी? कोई भी हमको सुख देता है तो सुख देने वाला याद आता है या नहीं आता है? तो जो याद आती रहती है वो याद से हमारे पाप कर्म भस्म होते जावेंगे। और फर्स्ट इम्प्रेशन इस दी लास्ट इम्प्रेशन। पहली बार मिलने में जो बात होती है, गहराई होती है वो बाद में उतनी नहीं होती है। इसलिए फायदा ही फायदा है।

**Time: 31.16**
**Student:** Baba, I have another small question. For example, you told us today that the more we remember, the more sins would be destroyed. This is about the destruction of sins through remembrance. How many sins were burnt during the three hours that we have met you?
**Baba:** Sins are not burnt by meeting (Baba), but the thoughts that keep coming after the meeting; will you remember it (meeting Baba) or not? If someone gives us happiness, then is the giver of happiness remembered or not? So, the thing that keeps coming to our mind, that remembrance will continue to burn our sins. And the first impression is the last impression. The importance of, the depth of the first meeting, does not remain later on to that extent. That is why there is only benefit.

समय – 33.21
जिज्ञासू – बाबा, वायब्रेशन का आध्यात्मिक अर्थ क्या है?
बाबा – हर आदमी के चारों ओर उसके संकल्पों का, वायब्रेशन का एक वृत्त घूमता रहता है। जैसे–जैसे संकल्पों का, दुष्ट संकल्पों का व्यक्ति होगा तो उसके वायब्रेशन का वृत्त चारों तरफ उसी तरह का घूमेगा और श्रेष्ठ संकल्पों का व्यक्ति होगा तो उसके चारों तरफ वैसे ही वृत्त घूमेंगे। तो जो आत्माऐं उनके कनेक्शन में आती है उनके ऊपर उसका संग का रंग लगता है। इसलिए कहते हैं कि – जैसे आत्मा रूपी बैटरी होती है वो बैटरी दूसरी बैटरी से जोड़ दी जाए तो एक बैटरी खाली होने लगेगी और दूसरी भरने लगेगी। ऐसे ही ये संग का रंग लगता है।

**Time: 33.21**
**Student:** Baba, what is the spiritual meaning of vibrations?
**Baba:** An aura of the thoughts and the vibrations of every person keep revolving around him. Whatever the kind of thoughts, wicked thoughts that a person creates that kind of circle of vibrations will revolve around him and if a person creates elevated thoughts, then that kind of circle will revolve around him. So, the souls which come in his connection, are coloured by his company.That is why it is said that just as there is a soul-like battery, if that battery is connected with another battery, then one battery will start becoming empty and the other one starts to fill . Similarly, the colour of company applies.

उदाहरण के लिए – नेहरूजी इतने सशक्त आत्मा थे कि जब वो सामने जाते थे तो कोई भी व्यक्ति कितना भी पीछे से ग्लानी करने वाला हो नेहरूजी की, जब सामने आता था तो उनके वायब्रेशन से अवभूत हो जाता था। और उनके अनुकूल बातें करने लग पड़ता था। उसको ज्ञान की भाषा में कहा गया है – पारसनाथ। मंदिर में पारसनाथ का मंदिर भी दिखाया गया है। ये हम बच्चों की सम्पूर्ण स्टेज की यादगार है। जब हमारी सम्पन्नता भरी स्टेज बनेगी तो जो भी



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

आत्मा हमारे संपर्क में आयेगी, संसर्ग में आयेगी, दृष्टि के तले आयेगी, वायब्रेशन के नजदीक आयेगी वो परिवर्तन होने लगेगी। हमको ज्यादा बोलने की भी दरकार नहीं रहेगी। अभी तो कितनी वाचा चलानी पड़ती है। कितनी भाग–दौड़ करनी पड़ती है। तब दूसरी आत्माओं का परिवर्तन होता है। होता है – होता है, नहीं भी होता है। उसको कहते हैं वायब्रेशन की शक्ति। वायब्रेट।

For example: Nehruji was such a powerful soul that when came in front of someone, then however much that person may be critisizing Nehruji at his back, but when he used to come in front of Nehruji, he used to be impressed by his vibrations. And he used to start talking in his favour. Such a person has been called in the language of knowledge as *Paarasnath*. A temple of *Paarasnath* has been shown as well.This is a memorial of the complete stage of us children. When we achieve our perfect stage, then whichever soul comes in our contact, in our connection, in front of our eyes, comes close to our vibrations, it will start to transform. There will not be a need for us to speak more. Now we have to speak so much. We have to run around so much. Only then the other souls transform. It may happen or it may not happen. That is called the power of vibrations. Vibrate.

समय– 43.37
जिज्ञासू – बाबा, जो विधवायें होती हैं उनको यहाँ मान नहीं देते हैं, सतयुग में क्यों देते हैं?
बाबा – सतयुग में विधवायें होती ही नहीं ना। सतयुग में कोई विधुर भी नहीं होगा और सतयुग में कोई विधवा भी नहीं होगी। वहाँ बिछुड़ना नहीं होता है और यहाँ इस दुनियाँ में बिछोड़ होता है, बिछुड़ना होता है। ये भी एक प्रकार का दुख हो जाता है। वहाँ कोई प्रकार का दुख नहीं होता। साथ–साथ जन्म लेना और साथ–साथ शरीर छोड़ना।

**Time: 43.47**
**Student:** Baba, widows are not respected here; but why are they respected in the Golden Age?
**Baba:** There are no widows in the Golden Age at all, are there? In the Golden Age there won't be any widower (*vidhur*) or a widow (*vidhwa*) either. There is no separation there and here in this world there is separation (*bichoh*). This is also a kind of sorrow. There is no kind of grief there. They take birth together and they leave their bodies together.

समय – 52.55
जिज्ञासू – .....
बाबा – जो भारत है वो आखरी जन्म में आते–आते और–और धर्मों के संग के रंग में आते–आते पतित बन जाता है। इतना पतित बन जाता है कि और दूसरे–दूसरे धर्म जो हैं उसको भीख देते हैं। अन्न, जल की। जैसे भारत को अभी सौ वर्षों में विदेशों से क्या लेना पड़ता है? उधार लेना पड़ता है। तब भारत का काम चलता है। अभी भारत के ऊपर अरबों, खरबों, शंखों उधार चढ़ा हुआ है। कांटों की शैया पर पड़ा हुआ है। माना दूसरे धर्म के लोग उसको ताने मारते रहते हैं कि तुम तो कहते थे हमारा भारत ऐसा था, वैसा था। अभी कैसा है?

**Time: 52.55**
**Someone asked something:**
**Baba:** The one, who is Bhaarat, becomes sinful by the time he takes the last birth and while being coloured by the company of other religions. He becomes so sinful that the other religions give him alms. Alms of food and water. For example, what is Bharat (India) required to take from the foreign countries during the past hundred years? It has to take loan. Only then can India manage its work. Now there is a loan of millions, billions and trillions (of rupees) against India.



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

He is lying on a bed of thorns. It means that the people of other religions keep taunting him : you used to say that our Bhaarat was like this, it was like that. What is it like now?

समय – 55.25
जिज्ञासू – बाबा, जब अपन (हम) याद में बैठते हैं ना। तो जो सांग्स है ना, भगवान के गाने। वो लगाना अच्छा है या नहीं लगाना अच्छा है?
बाबा – पहले बाबा बोलते थे कभी अवस्था खराब हो जाती है, चित्त अच्छा नहीं होता है, माया बहुत प्रकोप करती है तो अच्छे–अच्छे गीत रिकार्ड रखना चाहिए अपने पास। एक–दो रिकार्ड लगा लिए बाबा की याद में बैठ गए तो चित्त अच्छा हो जाएगा। वो तो बचपन की बात बताई। अभी हम बचपने में नहीं है एडवान्स पार्टी के हैं। क्या? एडवान्स के लिए अभी डायरेक्शन निकला है – गीत गाना नहीं है वास्तव में गीत सुनना भी नहीं है। क्यों? क्योंकि अब हम मनन–चिंतन–मंथन कर रहे हैं। हम दुनियाँ वालों को सुनाते हैं विनाश सामने खड़ा हुआ है। अब आया की अब आया। और हम ढोल मंज़ीरा बजाने में लगे हुए हैं। तो दो बातें हो जाती है ना। तो ऐसी दो बातें जो सुनेंगे तो ज्ञान के ऊपर विश्वास ही नहीं करेंगे।

**Time: 55.25**
**Student:** Baba, when we sit in remembrance, is it good to play the songs, the songs of God or not?
**Baba:** Earlier Baba used to say sometimes if our stage deteriorates, if we are not feeling good, if maya is troubling a lot, then we should keep good songs, records with us. If we sit in Baba's remembrance and play one or two records, then the mood will become good. That was said about childhood. Now we are not in our childhood; we belong to the advance party. What? Now a direction has been issued to the advance party you should not sing songs, actually you should not even listen to them. Why? It is because now we are thinking and churning. We tell the people of the world that destruction is staring at us. It is about to begin. And we are busy in playing musical instruments. So, it is like talking two things, isn't it? So, those who listen to two things like this will not believe the knowledge at all. (concluded)

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.



Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info